International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2023; 5(5): 05-09
Received: 10-03-2023
Accepted: 11-04-2023

अंगद प्रसाद मौर्य
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. स्वर्णलता त्रिपाठी
प्राचार्य, कृष्णा कालेज ऑफ एजुकेशन, मनगवाँ, जिला रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
अंगद प्रसाद मौर्य
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के प्रभाव का अध्ययन

अंगद प्रसाद मौर्य, डॉ. स्वर्णलता त्रिपाठी

सारांश
इस शोध पत्र के द्वारा प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के रूप में चयनित रीवा जिले के जिले के सभी विकासखण्डों से 5 शहरी – 5 ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय कुल 45 विद्यालयों से 4–4 शिक्षक कुल 180 शिक्षक, अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य और 10 छात्र व 10 छात्राएं कुल 900 का चयन दैव निदर्शन पद्धति द्वारा अध्ययन हेतु किया गया है। शोध क्षेत्र के 73.33 प्रतिशत प्रधानाध्यापक, 75.00 प्रतिशत शिक्षक, 63.89 प्रतिशत अभिभावक व 66.67 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया का सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के प्रभाव से सार्थक अन्तर है।

कुटशब्दः रीवा जिला, प्रारंभिक शिक्षा स्तर, विद्यार्थी, ऑनलइन, शिक्षण प्रक्रिया, शैक्षिक उपलब्धि, प्रभाव।

1. प्रस्तावना
किसी भी राष्ट् के चहुॅमुखी विकास के लिये शिक्षा का सर्वाधिक योगदान होता है। आदिकाल से लेकर आज तक शिक्षा के महत्व में कमी नहीं आई है। भारत में शिक्षा तत्व प्रणाली तथा संगठन का स्वभाव प्रायः वैदिक युग से माना जाता है। व्यापक अर्थ में शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु पूर्व तक कुछ न कुछ सीखता रहता है। सीखने से अनुभव की प्राप्ति होती है। सीखने के अनुभव से व्यक्ति के गुणों मे निखार ही नहीं वरन् उसके व्यवहारों में भी परिवर्तन आता है। व्यक्ति के व्यवहारों में आने वाले परिवर्तनों का ज्ञान सतत् मूल्यांकन प्रकिया द्वारा ही संभव है।

शारीरिक रूप से कक्षाओं में भाग लेने के लिए शिक्षार्थी किसी विशेष दिन–समय के अधीन नहीं होते हैं। वे अपनी सुविधानुसार शिक्षा सत्रों को कुछ देर के लिए रोक भी सकते हैं। सभी आनलाइन पाठ्यक्रमों के लिए उच्च प्रौद्योगिकी की आवश्यकता नहीं होती है। इसके लिए आम तौर पर केवल बुनियादी इंटरनेट उपयोग, आडियो और वीडियो की जानकारी होना ही काफी है, इस्तेमाल किए जाने वाले प्रौद्योगिकी के आधार पर छात्र काम के वक्त भी अपना पाठ्यक्रम शुरू कर सकते हैं और इस पाठ्यक्रम को किसी दूसरे कंप्यूटर पर अपने घर में भी पूरा कर सकते हैं।

ई–शिक्षा क्षेत्र के हाल की प्रवृत्ति स्क्रीनकास्टिंग है। वैसे तो कई स्क्रीनकास्टिंग उपकरण उपलब्ध हैं लेकिन वेब आधारित स्क्रीनकास्टिंग उपकरण ही सबसे अधिक और नवीनतम चर्चा का विषय है जो उपयोगकर्ताओं को सीधे अपने ब्राउजर से स्क्रीनकास्ट का निर्माण करने और वीडियो को आनलाइन उपलब्ध कराने की अनुमति प्रदान करता है ताकि दर्शक प्रत्यक्ष रूप से इस वीडियो को की स्ट्रीमिंग कर सके। ऐसा उपकरणों से यह फायदा है कि यह प्रस्तुतकर्ता को केवल उन्हें व्याख्या करने के बजाय अपने विचारों और विचारों के प्रवाह को प्रकट करने की क्षमता प्रदान करता है। यदि वे पहले की तरह केवल इनकी व्याख्या करें, तो इन्हें सरल पाठ निर्देशों के माध्यम से वितरित करने पर यह काफी भ्रामक हो सकता है। वीडियो एवं आडियो के संयोजन से विशेषज्ञ कक्षा के एक के बाद एक अनुभव की नकल कर सकते हैं और स्पष्ट, परिपूर्ण निर्देश प्रदान कर सकते हैं। शिक्षार्थियों के नजरिए से देखने पर पता चलता है कि यह उपयोगकर्ताओं को इन्हें कुछ देर के लिए रोकने और फिर उसे शुरू करने की क्षमता प्रदान करता है और शिक्षार्थी को अपनी खुद की चाल पर स्थानांतरित होने का लाभ भी प्रदान करता है, यह कुछ ऐसी चीजें हैं जिसे एक कक्षा हमेशा प्रदान नहीं कर सकती है।

2. अध्ययन की आवश्यकता
शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल रीवा जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के प्रभाव का अध्ययन

का आकंलन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य सरकार प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर योजना के क्रियान्वयन को प्रभावी ढंग से विकसित करने में समर्थ हो सकता है। प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर शासन द्वारा लागू किये गये पाठ्यक्रम में से परीक्षण के दौरान विद्यार्थियों ने कितना किस सीमा तक ज्ञान अर्जित किया है। शोधार्थी द्वारा चयनित शोध कार्य इस क्षेत्र में पूर्णतः नवीन है जो शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही उपयोगी व महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

3. उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है

1. शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

परिकल्पना शोध समस्या एवं समस्या समाधान के बीच की कड़ी है। परिकल्पनाा से तात्पर्य है कि किसी भी समस्या के हल के बारे में पूर्वानुमान लगाना। परिकल्पना एक ऐसा पूर्व विचार है, जो किसी सामान्य के संबंध में बना लिया जाता है और जिसकी सार्थकता की परीक्षा के लिए आवश्यक तथ्यों को एकत्रित किया जाता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् है

1. शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया का सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।
2. "शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के पड़ने वाले प्रभाव से कोई सार्थक अन्तर नही है।"

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला रीवा है। इसके अन्तर्गत 9 विकासखण्ड – रीवा, रायपुर कर्चुचिलयान, सिरमौर, जवा, हनुमना, गंगेव, त्यौथर, नईगढ़ी एवं मऊगंज हैं। अतः जिला अन्तर्गत स्थित प्रारंभिक शिक्षा स्तर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित किए गए है।

6. शोध विधियाँ

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु कई प्रकार की शोध विधियों का उपयोग किया जाता है। शोध विधियों के मुख्य प्रकार ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं प्रयोगात्मक है। शोध कार्य के अनुरूप प्रत्येक शोध विधि की अपनी विशेषताएँ एवं उपयोगिता है। शैक्षिक अनुसंधान की दृष्टि से प्रस्तुत शोध कार्य मुख्य रूप से सर्वेक्षणात्मक (वर्णनात्मक) होगा। शोध अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

6.1 सर्वेक्षण विधि – प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।

6.2 सांख्यिकी विधि – प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध हेतु स्वनिर्मित साक्षात्कार व प्रश्नावली पत्रक का उपयोग किया गया है।

7. न्यादर्श चयन

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है। न्यादर्श के रूप में चयनित रीवा जिले के जिले के सभी विकासखण्डों से 5 शहरी – 5 ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय कुल 45 विद्यालयों से 4–4 शिक्षक कुल 180 शिक्षक, अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य और 10 छात्र व 10 छात्राएं कुल 900 का चयन दैव निदर्शन पद्धति द्वारा अध्ययन हेतु किया गया है।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के प्रभाव पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989)[1], गुप्ता, एस.पी. (1997)[2], कपिल, एच.के. (1996)[3], खुल्लर, के.के. (1988)[4], आर्येन्दु, अखिलेश (2007)[5], कुमार, डॉ. संजय (2009)[6], कुमारी, शारदा (2005)[7], जड़िया, कमलेश कुमार एवं जय सिंह (2019)[8], राम, सुरेन्द्र, (2008)[9], सिंह एस.के. एवं सिंह, शीला (2006)[10]।

9. शोध क्षेत्र का परिचय

जिला रीवा मध्य प्रदेश के उत्तरी–पूर्वी कोने में स्थित है। रीवा का नामकरण नर्मदा नदी के दूसरे नाम 'रेवा' पर आधारित है। रीवा नगर का नाम पहले शायद 'रेवा' रखा गया था। उसी का बिगड़ा रूप अब रीवा बन गया है। इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तर प्रदेश का ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम में सतना जिला है। इसका आकार लगभग त्रिभुज के समान है। इसका विस्तार 24.18^0 उत्तरी अक्षांश से 25^0 उत्तरी अक्षांश तथा 81.2^0 पूर्वी देक्षांश से 82.18^0 पूर्वी देक्षांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1 : "शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया का सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।"

सारणी क्रमांक 1 : शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के प्रभाव अध्ययन

क्र.	न्यादर्श में चयनित	न्यादर्श में चयनित संख्या	प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया का सकारात्मक प्रभाव					
			पड़ रहा है		नहीं पड़ रहा है		पता नही	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	प्रधानाध्यापक	45	33	73ण्33	8	17ण्78	4	8ण्89
2.	शिक्षक	180	135	75ण्00	24	13ण्33	21	11ण्67
3.	अभिभावक	180	115	63ण्89	26	14ण्44	39	21ण्67
4.	छात्र	900	600	66ण्67	147	16ण्33	153	17ण्00
योग		1305	883	67ण्66	205	15ण्71	217	16ण्63
काई वर्ग ;χ^2द्ध			$\chi^2 = 692.25$					
'पी' मान			0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक					

स्वतंत्रता के अंश 2
0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 5.99
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 9.21

11. विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 में शोध क्षेत्र के प्रत्येक विकासखण्ड से न्यादर्श में चयनित 45 प्रधानाध्यापक, 180 शिक्षक, 180 अभिभावक व 900 छात्रो से शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के प्रभाव से सम्बंधी जानकारियों का संकलन किया गया है।

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 के ऑकड़े यह दर्शाते हैं, कि शोध क्षेत्र के 73.33 प्रतिशत प्रधानाध्यापक, 75.00 प्रतिशत शिक्षक, 63. 89 प्रतिशत अभिभावक व 66.67 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया का सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

न्यादर्श में चयनित 1305 अभिमतदाताओं में से 67.66 प्रतिशत अभिमत है कि शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया का सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है, 15.71 प्रतिशत अभिमत है कि शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया का सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ रहा है, जबकि 16.63 प्रतिशत अभिमत है कि इस संबंध में पता नही।

इसी प्रकार तीनों समूहों के मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर नहीं है, क्योंकि गणना से प्राप्त 'काई' वर्ग का मान 692. 25 आया है, जो कि 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर एवं स्वतंत्रता के अंश 2 पर सारणी के मान क्रमशः 5.99 एवं 9.21 से अधिक है अर्थात सार्थक है। अतः उपर्युक्त सारणी के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया का सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

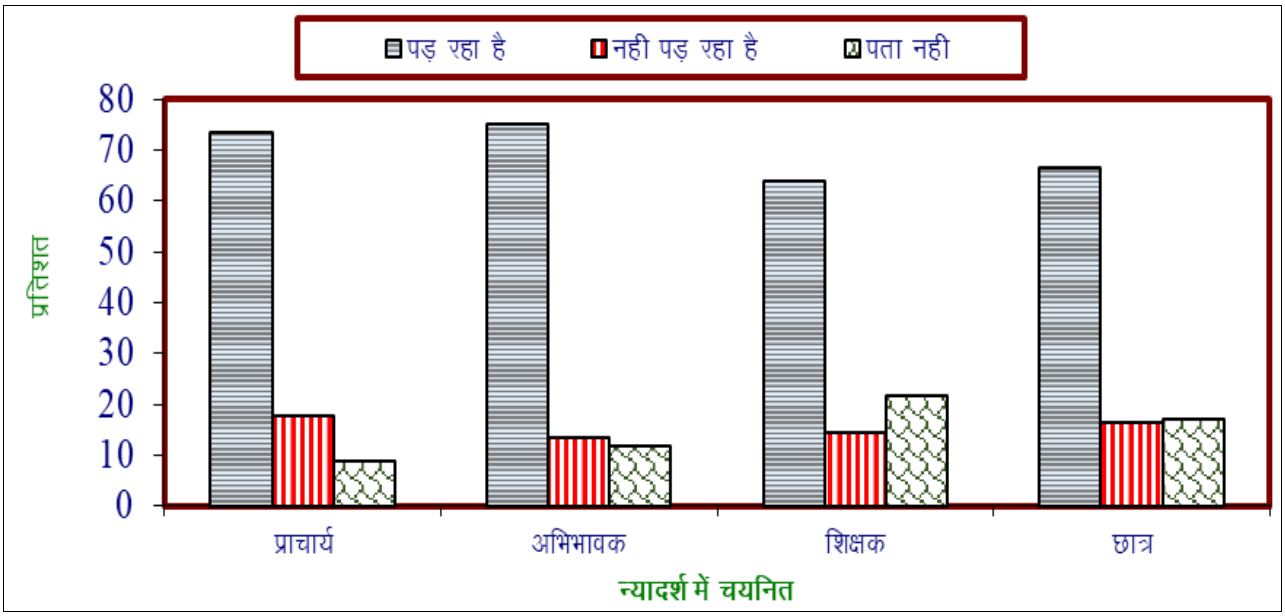

आरेख क्र. 1 : शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के प्रभाव अध्ययन

परिकल्पना क्र. 2 : "शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के पड़ने वाले प्रभाव से कोई सार्थक अन्तर नही है।"

सारणी क्रमांक 2 : शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		ग्रामीण	शहरी
समूह की संख्या (छ)		450	450
मध्यमान (ड)		50.58	55.53
मानक विचलन ै(क)		18.25	18.18
क्रान्तिक निष्पत्ति (ष्जष्द्ध		4.08	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

$DF = (N_1-1) + (N_2-1)$
$DF = (450-1) + (450-1) = 449 + 449 = 898$

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 मे न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के पड़ने वाले प्रभाव से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के ग्रामीण प्रारंभिक शिक्षा स्तर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत मध्यमान 50.58 है तथा मानक विचलन 18.25 है और शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के पड़ने वाले प्रभाव का औसत मध्यमान 55.53 है तथा मानक विचलन 18.18 है। 898 df पर सार्थकता के लिए श्जश का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.62 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.98 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त श्जश का मान 4.08 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से अधिक है। अतः शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना क्र. 2 अस्वीकृत होती है।

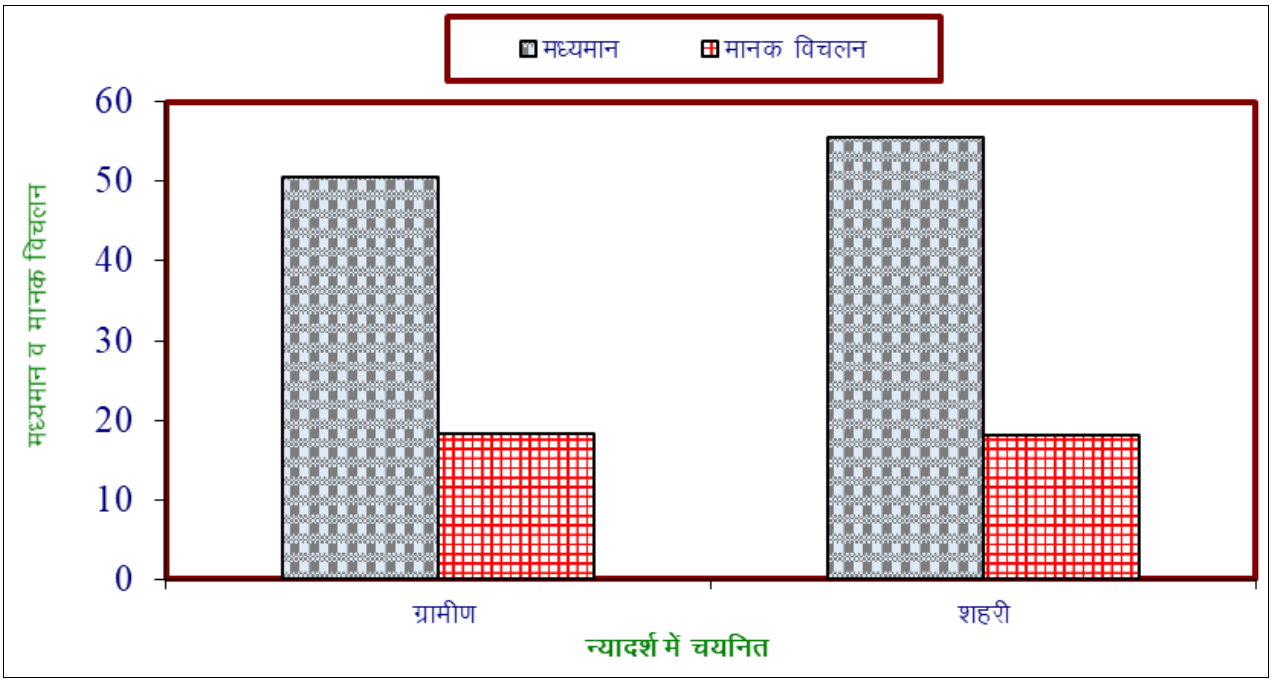

आरेख क्र. 2 : शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

12. निष्कर्ष

शोध क्षेत्र के 73.33 प्रतिशत प्रधानाध्यापक, 75.00 प्रतिशत शिक्षक, 63.89 प्रतिशत अभिभावक व 66.67 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि शोध क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया का सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी प्रारंभिक शिक्षा स्तर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर आनलाइन शिक्षण प्रक्रिया के पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर है।

13. संदर्भ

1. अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989) : मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मापन व मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
2. गुप्ता, एस.पी. (1997) : सांख्यिकी विधियाँ, शारदा पुस्तक भवना, इलाहाबाद.
3. कपिल, एच.के. (1996) : सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
4. खुल्लर, के.के. (1988) : राष्ट्रीय शिक्षा नीति, नई दिल्ली विज्ञापन एवं दृष्य प्रसार निर्देशालय.
5. आर्येन्दु, अखिलेश (2007) : प्राथमिक शिक्षा और सरकारी कार्य योजना, 'कुरूक्षेत्र', मासिक पत्रिका, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, वर्ष–53, अंक–11 पृ0–10–12।
6. कुमार, डॉ. संजय (2009) : 'सर्व शिक्षा अभियान' अल्फा पब्लिकेशन, नई दिल्ली.

7. कुमारी, शारदा (2005) : प्राथमिक स्तर पर आंकलन की प्रक्रिया, 'प्राथमिक शिक्षक', N.C.E.R.T. की त्रैमासिक पत्रिका, वर्ष 30, अंक +2, पृ. 46–50।
8. जड़िया, कमलेश कुमार एवं जय सिंह (2019) : "छतरपुर जिले में प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर समग्र मूल्यांकन का विद्यार्थियों की व्यवहारिक उपलब्धियों पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन", International Journal of Advanced Education and Research. 2019 Mar;4(2):80-82.
9. राम, सुरेन्द्र, (2008) : प्राथमिक विद्यालयों में सामान्य, मूक–बधिर एवं दृष्टिहीन बच्चों के शैक्षिक अपव्यय संबंधी समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन, अप्रकाशित शोध ग्रंथ, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी।
10. सिंह एस. के. एवं सिंह, शीला : बच्चे और विद्यालय, Anwenshika: Journal of Teacher education. 2006;3(2):99-103.